पाठ 5. नागार्जुन

नागार्जुन : का जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि एवं साहित्यकार नागार्जुन (मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र) एक प्रगतिशील रचनाकार थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनसाधारण की पीड़ा, सामाजिक विषमताएँ और राजनीतिक विद्रूपताओं को उजागर किया। उनकी कविताएँ जनवादी चेतना से ओत-प्रोत हैं और उन्हें 'युगचेता कवि' के रूप में जाना जाता है।

जीवन परिचय (**1911–1998)**

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन

- जन्म: 30 जून 1911 को बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा गाँव में।
- वास्तविक नाम: वैद्यनाथ मिश्र ('यात्री' उपनाम से भी लिखते थे)।
- शिक्षा: संस्कृत, पालि, प्राकृत भाषाओं में गहरी रुचि। कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की।

व्यक्तिगत संघर्ष एवं यात्राएँ

- बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर 'नागार्जुन' नाम धारण किया।
- देशाटन प्रिय था—नेपाल, तिब्बत, श्रीलंका आदि की यात्राएँ की।
- जेल यात्रा: 1940 के दशक में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण कारावास।

निधन

- **5** नवंबर **1998** को दरभंगा में उनका निधन हो गया।

साहित्यिक योगदान

काव्य संग्रह

1. युगधारा (1951) – प्रगतिशील विचारधारा पर आधारित।
2. हजार-हजार बाँहों वाली (1965) – जनवादी कविताओं का संग्रह।
3. प्यासी पथराई आँखें (1967) – मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति।
4. तुमने कहा था (1978) – प्रेम और विद्रोह की कविताएँ।
5. खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1993) – व्यंग्य और विद्रोह की रचनाएँ।

उपन्यास

- रतिनाथ की चाची (1948) – ग्रामीण जीवन पर आधारित।

- बलचनमा (1952) – सामाजिक असमानता पर प्रहार।
- वरुण के बेटे (1957) – नक्सलवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि पर।

महाकाव्य एवं खंडकाव्य

- भूमिजा (1959) – आदिवासी जीवन पर केंद्रित।
- पत्रहीन नग्न गाछ (1966) – पर्यावरण और मानवीय संघर्ष की कथा।

भाषा शैली

- जनभाषा का प्रयोग – ग्रामीण बोलियों एवं लोकप्रिय शब्दावली से युक्त।
- व्यंग्यात्मकता – सामाजिक कुरीतियों पर कटाक्ष।
- प्रगतिवादी दृष्टिकोण – मजदूरों, किसानों और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति।

साहित्य में विशेषताएँ

1. जनवादी चेतना – आम आदमी की समस्याओं को केंद्र में रखा।
2. प्रकृति प्रेम – गाँवों की सरल जीवनशैली का वर्णन।
3. राजनीतिक सजगता – सत्ता के दमनकारी रवैये के विरुद्ध आवाज उठाई।
4. हास्य-व्यंग्य – समाज की विसंगतियों पर करारी चोट।

पुरस्कार एवं सम्मान

- साहित्य अकादमी पुरस्कार (1969) – "हजार-हजार बाँहों वाली" के लिए।
- मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (1983) – हिंदी साहित्य में योगदान हेतु।
- जनकवि के रूप में प्रसिद्धि।

निष्कर्ष

नागार्जुन हिंदी साहित्य के प्रगतिशील एवं जनवादी कवि थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक न्याय, गरीबों के संघर्ष और राजनीतिक भ्रष्टाचार को उजागर किया। उनकी कविताएँ आज भी प्रासंगिक हैं और समाज को जागृत करने का कार्य करती हैं।

प्रश्न – अभ्यास

यह दंतुरित मुसकान

प्रश्न 1. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर **1**

- जब कवि बच्चे की मासूम मुस्कान को देखता है, तो उसका मन अत्यधिक प्रसन्न हो उठता है।
- उसे यह अहसास होता है कि इस मुस्कान में जीवन का एक गहरा संदेश छिपा हुआ है। यह मुस्कान संपूर्ण प्रकृति को भी अपनी ओर आकर्षित करती है।
- कवि का मानना है कि यह मुस्कान इतनी प्रभावशाली है कि यह किसी भी कठोर मन को भी कोमल बना सकती है।
- इस पर विचार करते हुए, कवि के मन में बच्चे की माँ के प्रति कृतज्ञता की भावना जाग्रत होती है, क्योंकि उसी के कारण वह इस अद्भुत मुस्कान से परिचित हो पाया है।

प्रश्न 2. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

उत्तर 2 बच्चों और बड़े व्यक्तियों की मुस्कान में अंतर

- स्वाभाविकता: बच्चों की मुस्कान स्वाभाविक और निश्छल होती है, जबकि बड़े व्यक्तियों की मुस्कान अक्सर सोच-समझ कर बनाई जाती है और कभी-कभी यह कृत्रिम भी लग सकती है।
- निर्दोषता: बच्चों की मुस्कान में मासूमियत और सच्चाई होती है, जबकि बड़े लोग आमतौर पर परिस्थितियों के अनुसार मुस्कुराते हैं।
- उन्मुक्तता: बच्चों की मुस्कान में पूरी आज़ादी और बेफिक्री होती है, जबकि बड़े व्यक्तियों की मुस्कान कभी-कभी स्थिति और वातावरण से बंधी रहती है।
- कोमलता और सुंदरता: बच्चे जब मुस्कुराते हैं, तो उनका चेहरा एक दिव्य सौंदर्य से भर जाता है, जबकि बड़े व्यक्तियों की मुस्कान में वह नैतिक आकर्षण कम होता है।
- आकर्षण: बच्चों के दूधिया दाँत और नन्हे चेहरे उनकी मुस्कान को और भी मोहक बना देते हैं, जबकि बड़े व्यक्तियों की मुस्कान में ऐसा आकर्षण कम होता है।
- प्रभाव: बच्चों की मुस्कान हर किसी को प्रभावित करने की शक्ति रखती है, जबकि बड़े व्यक्तियों की मुस्कान में वह प्रभाव उतना गहरा नहीं होता।

प्रश्न 3. कवि ने बच्चे को मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर **3:** कवि ने बच्चे की मुस्कान के सौंदर्य को कई सुंदर बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है।

- वह बच्चे की मुस्कान को मृतक में प्राण का संचार करने वाला अमृत मानते हैं, जो जीवन के पुनर्जीवन का प्रतीक है।
- कवि ने बच्चे की मुस्कान को अपनी झोंपड़ी में खिलते कमल के फूल से तुलना की है, जो सौंदर्य और शांति का प्रतीक है।
- बच्चे के शरीर को धूल से सना हुआ बताते हुए, कवि ने उसे परागयुक्त कमल के रूप में चित्रित किया है, जो जीवन की ताजगी और सुंदरता का प्रतीक है।
- मुस्कान के सौंदर्य को दिखाने के लिए कवि ने शेफालिका के फूलों के गिरने का दृश्य बिंबित किया है, जो उसकी कोमलता और आकर्षण को और अधिक गहरा बनाता है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

उत्तर: इस पंक्ति में कवि अपनी झोंपड़ी के आसपास खिलते हुए जलजात (कमल के फूल) का वर्णन कर रहे हैं। कवि के लिए यह दृश्य अत्यंत आकर्षक और सुखदायक है। वह महसूस करते हैं कि तालाब का दृश्य अब उनकी झोंपड़ी के आस-पास खिलते हुए कमल के फूलों की तरह खिल उठता है। इस पंक्ति में कवि की एक अंतरंग, सुखमय और सौंदर्यपूर्ण भावना व्यक्त हो रही है, जैसे तालाब का सुंदरता झोंपड़ी में समाहित हो गया हो।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?

उत्तर: इस पंक्ति में कवि बालक की मुस्कान और उसकी मासूमियत का वर्णन कर रहे हैं। कवि महसूस करते हैं कि जैसे ही बालक ने उन्हें स्पर्श किया, तब प्राकृतिक सौंदर्य के तत्व, जैसे बाँस या बबूल के पौधे, अपने रूप में परिवर्तन कर सौंदर्य का रूप धारण करने लगे। इसे एक तरह से बालक के स्पर्श की जादुई शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवि यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि बालक के सौंदर्यपूर्ण स्पर्श से निरस और सौंदर्यहीन वस्तुएं भी सुंदर हो उठती हैं।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5. मुसकान और क्रोध भिन्न-भिन्न भाव हैं। इनकी उपस्थिति से ब बातावरण की भिनता का चित्रण कीजिए।

उत्तर 5

• मुस्कान और क्रोध दो विपरीत भावनाएँ हैं।
• जब व्यक्ति को उसकी इच्छानुसार कार्य प्राप्त होते हैं, तो उसके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है।
• इसके विपरीत, जब कोई कार्य उसकी इच्छा के खिलाफ होता है, तो वह क्रोध महसूस करता है।
• मुस्कान से वातावरण में सुख, सौंदर्य और आनंद का संचार होता है।
• वहीं, क्रोध से नफरत, घृणा और प्रतिशोध की भावना उत्पन्न होती है।
• मुस्कान से प्रेम और मित्रता का वातावरण बनता है, जबकि क्रोध से संघर्ष और अपमान बढ़ता है।

प्रश्न 6. दंतुरित मुसकान से बच्चे को उम्र का अनुमान लगाइए और तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर 6- बच्चे की उम्र:

- 'दंतुरित मुस्कान' कविता से यह समझा जा सकता है कि बच्चे की उम्र लगभग एक से डेढ़ साल के बीच हो सकती है।
- इसका कारण यह है कि एक साल के करीब बच्चे के दांत निकलने लगते हैं और कुछ महीनों में वे अच्छे से दिखाई देने लगते हैं।
- कविता में यह भी उल्लेखित है कि बच्चा अभी खुद से चल नहीं सकता, जिससे यह संकेत मिलता है कि उसकी उम्र डेढ़ साल से कम है।

प्रश्न 7. बच्चे से कवि की मुलाकात का जो शब्द-चित्र उपस्थित हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर 7 –

• कवि की बच्चे से पहली मुलाकात उसकी झोंपड़ी में होती है।
• उस समय बच्चा अपनी नन्हीं मुस्कान के साथ, झलकते हुए नए दाँतों को दिखाता है। यह देखकर कवि को लगता है कि इस बच्चे की मुस्कान मृतकों में भी जीवन का संचार कर सकती है।
• बच्चे का धूल से सना हुआ शरीर देख कवि को ऐसा लगता है कि जैसे तालाब का कमल उसके घर की झोंपड़ी में खिल रहा हो।
• कवि को बच्चे का सौंदर्य ऐसा महसूस होता है कि यह हर जगह फैला हुआ है।
• उसे यह भी लगता है कि बच्चे की छोटी-सी सांसों के स्पर्श से कठोर पत्थर भी पिघलकर पानी में बदल गए होंगे।
• बच्चे के स्पर्श से बाँस या बबूल जैसे कठोर पौधे भी मीठे फूलों से लद गए होंगे।
• कवि देखता है कि बच्चा लगातार उसे निहार रहा है, तो उसे लगता है कि बच्चा शायद उसे पहचान नहीं पा रहा।
• बच्चे द्वारा लगातार देखे जाने पर कवि को यह महसूस होता है कि बच्चा शायद थक गया होगा। इसी सोच में कवि खुद ही अपनी आँखें हटा लेता है।
• कवि यह भी महसूस करता है कि अगर बच्चे की माँ बीच में नहीं होती, तो वह बच्चे की मुस्कान और उसके सौंदर्य से अपरिचित रहता।
• कवि सोचता है कि वह अक्सर घर से बाहर रहता है, इसीलिए बच्चा उसे पहचान नहीं पाता, जबकि उसकी माँ उसे अपनी उँगलियों से बच्चे के मुँह में पंचामृत डालकर खिलाती रहती है।
• जब बच्चा कवि को तिरछी नजरों से देखता है, तब दोनों की आँखें मिलती हैं। इस दौरान बच्चे की मुस्कान कवि को और भी आकर्षक लगने लगती है।

पाठेतर सक्रियता

• आप जब भी किसी बच्चे से पहली बार मिलें तो उसके हाव-भाव, व्यवहार आदि को सूक्ष्मता से देखिए और उस अनुभव को कविता या अनुच्छेद के रूप में लिखिए।

उत्तर - जब भी किसी बच्चे से पहली बार मिलता हूँ,
उसकी आँखों में कुछ खास सा चमकता हूँ।
नन्हे हाथों में नज़र आती है कच्ची मासूमियत,
चेहरे पर उभरती है एक नयी सी जिज्ञासुता।

बिना शब्दों के भी, वो बहुत कुछ कह जाता है,
हर मुस्कान में, एक नया रंग सजाता है।
कभी हंसते हुए, कभी थोड़ा सा घबराया,
जैसे कुछ नया करने के लिए थोड़ा सा शरमाया।

आंखों में सवाल, होंठों पे उत्तर का ख्वाब,
वो छोटी सी दुनिया, बिना किसी दाब।
क्या ये दुनिया उसके लिए पूरी नई होगी,
क्या वो हर दिन कुछ नया सीखेगा, ये आशा होगी।

इस छोटे से अद्भुत संसार का हिस्सा,
उसकी मासूमियत में छुपा है जीवन का सपना।
और मैं बस उस पल को महसूस करता हूँ,
जो कुछ भी है, वो सारी कायनात से प्यारा हूँ।

• एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नागार्जुन पर बनाई गई फ़िल्म देखिए ।

उत्तर - विद्यार्थी स्वयं करें।

फसल

प्रश्न 1. कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर- 1

• कवि के अनुसार, फसलें नदियों के पानी, मनुष्य के श्रम, मिट्टी की गुण-धर्म, सूरज की किरणों और हवा की हलचल का एक अद्भुत समन्वय होती हैं। यानी फसल उगाने में नदियों का पानी, उर्वरक मिट्टी, मनुष्य की मेहनत, सूरज की किरणों और हवा का योगदान मिलता है।

• इस तरह फसलें प्रकृति और मनुष्य के मिलकर काम करने का एक सुंदर परिणाम हैं।

प्रश्न 2. कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्त्वों की यात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?

उत्तर- 2 फसल उगाने के लिए जो मुख्य तत्व आवश्यक हैं, वे निम्नलिखित हैं:

1. नदियों का पानी
2. मनुष्य द्वारा किया गया परिश्रम
3. उपजाऊ मिट्टी
4. सूर्य की किरणें
5. बहती हुई हवा

इन तत्वों का सही संतुलन फसल की अच्छी उपज के लिए जरूरी है।

प्रश्न 3. फसल को 'हाथों के स्पर्श को गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर- **3**

• कवि ने फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' के रूप में व्यक्त किया है।

• इस वाक्य के माध्यम से कवि यह कहना चाहते हैं कि फसल की उपज में इंसान की कठिन मेहनत और परिश्रम का अहम योगदान होता है।

• इंसान अपने हाथों से खेतों में काम करता है, बीज बोता है, और सिंचाई करता है। इसके साथ ही, वह उर्वरक और अन्य पोषक तत्वों से फसल को सशक्त बनाता है।

• फसल की रक्षा करना भी उसकी जिम्मेदारी होती है, जिसमें वह जानवरों और पक्षियों से फसल की सुरक्षा करता है।

• इस कड़ी मेहनत के बाद फसल तैयार होती है और यह मनुष्य के भोजन की आपूर्ति करती है।

• इस प्रकार, फसल को मनुष्य का पोषण करने और उसके जीवन को बनाए रखने का गौरव प्राप्त होता है।

• यह गरिमा और महिमा केवल मनुष्य के कठिन परिश्रम और समर्पण से ही संभव हो पाती है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कोजिए-

(क) रूपांतर है सूरज की किरणों का

सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

उत्तर- (क) भाव-

• फसल सूर्य की किरणों का एक रूपांतरण है। जब सूर्य का प्रकाश पौधों पर पड़ता है, तो वे उस प्रकाश का उपयोग करके अपना भोजन तैयार करते हैं। इस प्रकार, सूर्य की किरणें फसल के रूप में बदल जाती हैं।

• जब हवा बहती है और पौधों के पास से गुजरती है, तो पौधे उसे श्वास के रूप में ग्रहण करते हैं। इस प्रकार, हवा का संकुचित रूप पौधों के भीतर समा जाता है, और यह हवा फसल में फैलकर उसे लहलहाने का कारण बनती है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5. कवि ने फसल को हज़ार- हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म कहा है

(क) मिट्टी के गुण-धर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे?

उत्तर (क): मिट्टी का गुण-धर्म यह है कि यह जीवन का आधार होती है। यह पेड़-पौधों को जन्म देती है, उनकी वृद्धि करती है और उन्हें पोषित करती है। मिट्टी का यही गुण है कि यह जीवन के सृजन और पालन में सहायक होती है, इसलिए इसे जननी के समान माना जाता है।

(ख) वर्तमान जीवन शैली मिट्टी के गुण-धर्म को किस-किस तरह प्रभावित करती है?

उत्तर (ख): वर्तमान जीवन शैली का प्रभाव मिट्टी के गुण-धर्म पर नकारात्मक है। आधुनिकता और विकास के साथ मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। वह अत्यधिक कृषि से मिट्टी की उर्वरता का दोहन कर रहा है, लेकिन उसकी सुरक्षा के लिए कोई कदम नहीं उठा रहा है।
• वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से भूमि की उर्वरा शक्ति घट रही है और भूमि अपरदन बढ़ रहा है।
• रसायनों, प्लास्टिक और अन्य प्रदूषक पदार्थों के कारण मिट्टी की गुणवत्ता पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है।
इस प्रकार, मनुष्य की जीवन शैली मिट्टी के गुण-धर्म को नष्ट कर रही है।

(ग) मिट्टी द्वारा अपना गुण-धर्म छोड़ने की स्थिति में क्या किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना की जा सकती है?

उत्तर (ग): यदि मिट्टी अपने गुण-धर्म को छोड़ देती है, तो धरती पर किसी भी प्रकार का जीवन संभव नहीं रहेगा। पेड़-पौधों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, जिससे फसलें नहीं उगेंगी। नतीजतन, मानव जीवन के लिए भोजन की कमी हो जाएगी और जीवन अस्तित्वहीन हो जाएगा। साथ ही, अन्य जीव-जंतु भी बिना पौधों के भोजन के बिना समाप्त हो जाएंगे। ऑक्सीजन का स्रोत खत्म होने से वायुमंडल भी असंतुलित हो जाएगा, जिससे जीवन की कल्पना करना असंभव हो जाएगा।

(घ) मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर (घ): हम मिट्टी के गुण-धर्म को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
• हम खुद भी मिट्टी को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित कर सकते हैं।
• वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से बचने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए और अगर कोई पेड़ काटना जरूरी हो तो उसे किसी अन्य पेड़ से बदलने की कोशिश करनी चाहिए।
• हमें रसायन, प्लास्टिक और अन्य प्रदूषक पदार्थों को मिट्टी में नहीं डालना चाहिए और इस बारे में दूसरों को भी जागरूक

करना चाहिए।

इस प्रकार, हमारी जिम्मेदारी है कि हम मिट्टी के गुण-धर्म को संरक्षित रखें ताकि जीवन का संचार बना रहे।

पाठेतर सक्रियता

• इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया के माध्यमों द्वारा आपने किसानों की स्थिति के बारे में बहुत कुछ सुना, देखा और पढ़ा होगा। एक सुदृढ़ कृषि-व्यवस्था के लिए आप अपने सुझाव देते हुए अखबार के संपादक को न लिखए।

उत्तर – (विद्यार्थी स्वयं करें।)

संपादक,
(अखबार का नाम),
(संपादक का पता)

विषय: सुदृढ़ कृषि-व्यवस्था के लिए सुझाव

मान्यवर,

सप्रेम नमस्कार।

कृषि हमारे देश की रीढ़ है, और यह हमारे समाज की सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्रों में से एक है। वर्तमान में किसानों की स्थिति को लेकर विभिन्न मीडिया माध्यमों के माध्यम से कई तथ्य उजागर हो चुके हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि हमारी कृषि-व्यवस्था समस्याओं से घिरी हुई है। किसानों को कर्ज़, बेमौसम बारिश, सूखा, उचित मूल्य की कमी, और अव्यवस्थित मंडियां जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में, मैं कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूं, जो सुदृढ़ कृषि-व्यवस्था की ओर एक कदम बढ़ा सकते हैं।

1. कृषि को एक उद्योग के रूप में मान्यता
   किसानों को कृषि में आधुनिक तकनीकों का उपयोग बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इसके लिए राज्य और केंद्र सरकार को किसानों के लिए विशेष योजनाएं बनानी चाहिए, जो उन्हें उन्नत कृषि उपकरणों और तकनीकों के लिए सब्सिडी उपलब्ध कराएं।

2. कृषि ऋण की दरों को कम करना
   किसानों को सस्ते और सुलभ ऋण की सुविधा मिलनी चाहिए। इसके अलावा, कृषि ऋण को आसान शर्तों पर पुनर्भुगतान के लिए तैयार किया जाए ताकि किसान कर्ज के बोझ से दबे न रहें।

3. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटना
   किसानों को जलवायु परिवर्तन और मौसम की अनिश्चितताओं से बचाने के लिए उचित बीज, सिंचाई की सुविधा और मौसम संबंधी पूर्वानुमान से अवगत कराना जरूरी है।

4. कृषि उत्पादों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (**MSP**) सुनिश्चित करना
   सरकार को किसानों के उत्पादों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करना चाहिए, ताकि वे अपना उत्पाद बेचने में हानि न उठाएं। मंडी व्यवस्था में सुधार और अधिक पारदर्शिता की आवश्यकता है।

5. कृषि में निवेश बढ़ाना
   कृषि क्षेत्र में निजी और सरकारी दोनों क्षेत्रों से निवेश बढ़ाना होगा ताकि किसानों को उच्च गुणवत्ता की बीज, खाद, और उर्वरक मिल सकें।

6. कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण
   किसानों को नई कृषि पद्धतियों और तकनीकी ज्ञान से अवगत कराने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

इन सुझावों को लागू करने से हमारी कृषि-व्यवस्था में न केवल सुधार होगा, बल्कि किसानों की स्थिति में भी सुधार आएगा। यह सुनिश्चित करेगा कि देश में कृषि क्षेत्र लगातार मजबूत और सशक्त बने।

आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

आपका विश्वासपूर्ण,
(आपका नाम)
(आपका पता)
(तारीख)

• फसलों के उत्पादन में महिलाओं के योगदान को हमारी अर्थव्यवस्था में महत्व क्यों नहीं दिया जाता है? इस बारे में कक्षा में

उत्तर- फसलों के उत्पादन में महिलाओं के योगदान को भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्व न देने के कई कारण हो सकते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1. पारंपरिक दृष्टिकोण: भारतीय समाज में यह धारणा है कि कृषि कार्य मुख्य रूप से पुरुषों का कार्य है, जबकि महिलाओं का योगदान अधिकतर घर की देखभाल और परिवार की परवरिश तक सीमित माना जाता है। इस मानसिकता के कारण, महिला किसानों को कम महत्व दिया जाता है।

2. अर्थव्यवस्था में नज़रअंदाजी: महिलाएँ आमतौर पर कृषि कार्य में असंगठित रूप से जुड़ी होती हैं और अक्सर उनके योगदान का मूल्यांकन नहीं किया जाता। बहुत से क्षेत्रों में महिलाएँ श्रम के पीछे होती हैं, लेकिन उनका योगदान सांस्कृतिक और सामाजिक कारणों से अपरिभाषित रहता है।

3. श्रमिक का अनौपचारिक दर्जा: महिलाओं का कृषि कार्य असंगठित और अनौपचारिक तरीके से होता है, इसलिए उनका श्रम राष्ट्रीय उत्पादन में ठीक से शामिल नहीं किया जाता है। अधिकतर महिलाएँ खेती के काम में मदद करती हैं, लेकिन भूमि का स्वामित्व पुरुषों के पास होता है।

4. संसाधनों और तकनीकी सहायता की कमी: महिलाओं के पास कृषि से संबंधित उपकरण, उन्नत तकनीकी जानकारी, और वित्तीय संसाधन कम होते हैं। यही कारण है कि उनका योगदान पूरी तरह से पहचान में नहीं आता और उसे उचित मान्यता नहीं मिलती।

5. सामाजिक असमानता: भारत में महिलाएँ अक्सर सामाजिक रूप से पुरुषों से कमतर मानी जाती हैं, और उनके कार्यों की सराहना कम होती है। उनका कृषि कार्य भी इस असमानता का शिकार होता है, जिससे उनके योगदान को नजरअंदाज किया जाता है।

इन कारणों से, फसलों के उत्पादन में महिलाओं के योगदान को भारतीय अर्थव्यवस्था में उचित महत्व नहीं दिया जाता है। इसके बावजूद, महिलाओं के कृषि में योगदान को पहचानने और उन्हें उचित संसाधन और सम्मान देने की आवश्यकता है।

(कविता: यह दंतुरित मुसकान)

यह दंतुरित मुसकान

तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान,
मृतक में भी डाल देगी जान।

धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात,
छोड़कर तालाब, मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण।

छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े,
शेफालिका के फूल!

बाँस था कि बबूल?
तुम मुझे पाए नहीं पहचान?

देखते ही रहोगे अनिमेष,
थक गए हो?
आँख लूँ मैं फिर?

क्या हुआ यदि हो स्वयं परिचित न पहली बार?
यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज,
मैं न सकता देख,
मैं न पाता जान—
तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान।

धन्य तुम! माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं, इतर, मैं अन्य।

इस अतिथि से प्रिय, तुम्हारा क्या रहा संवाद?
उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क।

देखते तुम इधर कनखी मार,
और होतीं जब कि आँखें चार—
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान,
मुझे लगती बड़ी ही छविमान! ..... सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सह-प्रसंग व्याख्या: "यह दंतुरित मुसकान" (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

प्रसंग

यह कविता निराला जी के काव्य संग्रह "अनामिका" से ली गई है, जिसमें एक शिशु की मासूम मुसकान के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति की सुंदरता को चित्रित किया गया है। कवि एक नन्हे बच्चे की दंतुरित (दाँत निकलती हुई) मुसकान देखकर भावविभोर हो जाता है और उसके सौंदर्य व कोमलता से प्रभावित होता है।

सह-प्रसंग व्याख्या

1. "तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान, मृतक में भी डाल देगी जान।"

- भावार्थ: शिशु की हँसी इतनी मोहक और जीवंत है कि यह मृत व्यक्ति में भी प्राण फूँक सकती है।
- साहित्यिक सौंदर्य:
    - अतिशयोक्ति अलंकार – "मृतक में जान डालना" असंभव है, पर कवि शिशु की मुसकान की महत्ता दर्शाता है।
    - मानवीकरण – मुसकान को जीवंत माना गया है।

2. "धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात, छोड़कर तालाब, मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।"

- भावार्थ: शिशु का शरीर धूल से सना हुआ है, फिर भी उसकी उपस्थिति से कवि की कुटिया में कमल खिल उठे हैं।
- साहित्यिक सौंदर्य:
    - प्रतीकात्मकता – "जलजात" (कमल) शिशु की पवित्रता का प्रतीक है।
    - विरोधाभास – धूल में सने शरीर में भी दिव्यता है।

3. "परस पाकर तुम्हारा ही प्राण, पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण।"

- भावार्थ: शिशु के स्पर्श मात्र से कठोर पत्थर भी पिघलकर जल बन जाएगा।
- साहित्यिक सौंदर्य:
    - रूपक अलंकार – कवि का कठोर हृदय शिशु की मासूमियत से पिघल जाता है।

4. "छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े, शेफालिका के फूल!"

- भावार्थ: शिशु के स्पर्श से प्रकृति में उल्लास फैल जाता है, जैसे शेफालिका (एक सुगंधित फूल) झरने लगे।
- साहित्यिक सौंदर्य:
    - प्रकृति चित्रण – शिशु और प्रकृति का अद्भुत संबंध दिखाया गया है।

5. "तुम मुझे पाए नहीं पहचान? देखते ही रहोगे अनिमेष!"

- भावार्थ: शिशु कवि को पहचान नहीं पा रहा, पर उसे एकटक देखता रहता है।
- मनोवैज्ञानिक पक्ष: बच्चे का कौतूहल और कवि का उसके प्रति स्नेह प्रकट हुआ है।

6. "धन्य तुम! माँ भी तुम्हारी धन्य!"

- भावार्थ: कवि शिशु और उसकी माँ को आशीर्वाद देता है, क्योंकि उन्होंने उसे यह अनमोल मुसकान दिखाई।
- भावपक्ष: कवि स्वयं को "अतिथि" और "अन्य" मानता है, पर शिशु की मुसकान उसे अपनापन देती है।

काव्यगत विशेषताएँ

✓ छायावादी शैली – प्रकृति और मानवीय भावनाओं का मिश्रण।
✓ मुक्त छंद – पारंपरिक छंदों से मुक्ति।
✓ अलंकार योजना – अतिशयोक्ति, रूपक, प्रतीकात्मकता।
✓ भाषा – संस्कृतनिष्ठ शब्दावली ("दंतुरित", "शेफालिका")।

निष्कर्ष

इस कविता में निराला जी ने एक साधारण शिशु की मुसकान के माध्यम से जीवन का आनंद, प्रकृति का सौंदर्य और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। यह कविता उनकी कोमल भावनाओं और कल्पनाशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

"यह दंतुरित मुसकान" कविता पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर

प्रश्न 1: कवि ने शिशु की मुसकान को "दंतुरित" क्यों कहा है? इसका क्या प्रतीकात्मक अर्थ है?

उत्तर:

- "दंतुरित" का अर्थ है—दाँत निकलते हुए शिशु की वह मुसकान जो अधूरी, मासूम और स्वाभाविक है।
- प्रतीकात्मक अर्थ: यह मुसकान नवजीवन, निष्कपटता और आशा का प्रतीक है। कवि के लिए यह जीवन की सरलता व सुंदरता का दर्पण है।

प्रश्न 2: "मृतक में भी डाल देगी जान" पंक्ति में निहित अतिशयोक्ति अलंकार को समझाइए।

उत्तर:

- अतिशयोक्ति अलंकार: शिशु की मुसकान इतनी प्राणवान है कि वह मृत व्यक्ति को भी जीवित कर सकती है (जो वास्तव में असंभव है)।
- प्रभाव: इससे शिशु की मुसकान की महत्ता और कवि के आशावादी दृष्टिकोण का पता चलता है।

प्रश्न 3: कवि ने शिशु के "धूलि-धूसर गात" और "जलजात" (कमल) का विरोधाभासी चित्रण क्यों किया?

उत्तर:

- विरोधाभास: शिशु का शरीर धूल से सना है, फिर भी उसकी उपस्थिति से कवि की झोंपड़ी में कमल खिल उठते हैं।
- भावार्थ: यह दर्शाता है कि सच्चा सौंदर्य बाहरी स्वच्छता में नहीं, बल्कि मासूमियत और प्रेम में निहित है।

प्रश्न 4: "पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण" पंक्ति में कवि किसे "पाषाण" मानता है और क्यों?

उत्तर:

- पाषाण: कवि स्वयं को कठोर हृदय वाला ("पाषाण") मानता है, क्योंकि वह जीवन के संघर्षों से थक चुका है।
- रूपक अलंकार: शिशु की मुसकान के स्पर्श से उसका कठोर मन पिघलकर कोमल भावनाओं ("जल") में बदल जाता है।

प्रश्न 5: कवि ने शिशु और प्रकृति (शेफालिका, जलजात) के बीच क्या समानता दर्शाई है?

उत्तर:

- समानता: जिस तरह शेफालिका के फूल सुगंध से वातावरण को महका देते हैं और कमल कीचड़ में भी खिलते हैं, उसी तरह शिशु की मुसकान कवि के निराशामय जीवन में आशा का संचार करती है।
- प्रकृति मानवीकरण: शिशु की हँसी से प्रकृति भी प्रफुल्लित हो उठती है।

प्रश्न 6: कवि ने स्वयं को "चिर प्रवासी" और "अन्य" क्यों कहा है?

उत्तर:

- चिर प्रवासी: कवि स्वयं को जीवन के संघर्षों में भटका हुआ महसूस करता है।
- अन्य: शिशु और उसकी माँ के आत्मीय संबंध के सामने वह स्वयं को बाहरी ("अतिथि") समझता है। परंतु शिशु की मुसकान उसे इस भावना से मुक्त कर देती है।

प्रश्न 7: कविता का अंत "मुझे लगती बड़ी ही छविमान!" से क्यों किया गया है?

उत्तर:

- भावार्थ: कवि शिशु की मुसकान को "छविमान" (सुंदर) बताकर इसके प्रति अपनी भावुकता व्यक्त करता है।
- संदेश: सरलता और मासूमियत ही जीवन का वास्तविक सौंदर्य है, जो कवि को आंतरिक शांति देती है।

पाठ 5: नागार्जुन कविता: "फसल"

“फसल”

एक की नहीं,
दो की नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू है।

एक की नहीं,
दो की नहीं,
लाख-लाख, कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा है।

एक की नहीं,
दो की नहीं,
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म है।

फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह—
नदियों के पानी का जादू है वह,
हाथों के स्पर्श की महिमा है,
भूरी-काली-साँवली मिट्टी का गुणधर्म है।

रूपांतर है सूरज की किरणों का,
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

सह-प्रसंग व्याख्या: "फसल" (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

प्रसंग:
यह कविता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित है, जिसमें फसल के महत्व और उसके निर्माण में प्रकृति तथा मानव श्रम के योगदान को काव्यात्मक ढंग से व्यक्त किया गया है। कवि बताते हैं कि फसल केवल अनाज का ढेर नहीं, बल्कि नदियों, मिट्टी, सूरज की किरणों और किसानों के परिश्रम का फल है।

सह-प्रसंग व्याख्या:

1. "एक की नहीं, दो की नहीं, ढेर सारी नदियों के पानी का जादू है।"

- भावार्थ: फसल के उगने के लिए केवल एक या दो नदियों का पानी पर्याप्त नहीं है, बल्कि अनेक नदियों के जल का समन्वय होता है।
- साहित्यिक सौंदर्य:
    - पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार ("एक की नहीं, दो की नहीं") से कवि फसल के निर्माण में प्रकृति के विशाल योगदान को दर्शाते हैं।
    - "जादू" शब्द प्रकृति के चमत्कार को दर्शाता है।

2. "लाख-लाख, कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा है।"

- भावार्थ: फसल लाखों किसानों के परिश्रम का परिणाम है। उनके हाथों की मेहनत ही अनाज को उगाती है।

- साहित्यिक सौंदर्य:
    - अतिशयोक्ति अलंकार ("लाख-लाख, कोटि-कोटि") से किसानों के अथक परिश्रम का महत्त्व उभरता है।
    - "गरिमा" शब्द किसानों के सम्मान को दर्शाता है।

3. "हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म है।"

- भावार्थ: फसल असंख्य खेतों की उपजाऊ मिट्टी की शक्ति से पैदा होती है।
- साहित्यिक सौंदर्य:
    - रूपक अलंकार – मिट्टी के "गुणधर्म" को फसल का आधार बताया गया है।

4. "रूपांतर है सूरज की किरणों का, सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!"

- भावार्थ: फसल सूर्य की ऊर्जा और हवा के सहयोग से बनती है।
- साहित्यिक सौंदर्य:
    - मानवीकरण अलंकार – हवा की "थिरकन" को मानवीय भाव दिया गया है।
    - "रूपांतर" शब्द प्रकृति के परिवर्तनशील स्वरूप को दर्शाता है।

काव्यगत विशेषताएँ:

1. भाषा: सरल, प्रवाहमयी खड़ी बोली।
2. छंद: मुक्तछंद।
3. रस: श्रृंगार (प्रकृति के प्रति) और करुण (किसानों के परिश्रम के प्रति)।
4. अलंकार: पुनरुक्ति, अतिशयोक्ति, रूपक।

संदेश:

कवि का संदेश है कि फसल केवल अनाज नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव श्रम का पवित्र मेल है। इसे सम्मान देना चाहिए।

निष्कर्ष: निराला जी ने इस कविता में फसल के माध्यम से प्रकृति-प्रेम और किसानों के महत्व को उजागर किया है। यह कविता हमें प्रकृति और श्रम के प्रति आभार व्यक्त करना सिखाती है।

"फसल" कविता पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि ने फसल को 'नदियों के पानी का जादू' क्यों कहा है?

उत्तर: कवि ने फसल को 'नदियों के पानी का जादू' इसलिए कहा है क्योंकि फसल के उगने के लिए अनेक नदियों के जल की आवश्यकता होती है। यह जल प्रकृति का एक चमत्कारिक उपहार है, जो बीज को अन्न में बदल देता है।

प्रश्न 2. 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर: 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' से कवि का आशय किसानों के परिश्रम से है। लाखों-करोड़ों किसानों के हाथों की मेहनत ही फसल को उपजाने में सहायक होती है, इसलिए उनके श्रम को सम्मानपूर्वक याद किया गया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'फसल' कविता में प्रकृति और मानव श्रम के योगदान को किस प्रकार दर्शाया गया है?

उत्तर:

- प्रकृति का योगदान:
    - नदियों का पानी, सूरज की किरणें और हवा की थिरकन फसल के विकास में सहायक हैं।
    - मिट्टी का गुणधर्म (उर्वरा शक्ति) फसल को पोषण देता है।
- मानव श्रम का योगदान:
    - किसानों के परिश्रम के बिना फसल संभव नहीं है।
    - उनके हाथों का स्पर्श बीज को सही दिशा देता है।
- निष्कर्ष: फसल प्रकृति और मानव के सहयोग का सुंदर उदाहरण है।

प्रश्न 2. 'फसल' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- केंद्रीय भाव: फसल केवल अनाज नहीं, बल्कि प्रकृति की देन और मनुष्य के परिश्रम का फल है।
- सन्देश:
    - प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए।
    - किसानों के श्रम का सम्मान करना चाहिए।
- भाषा-शैली: सरल, प्रतीकात्मक और मुक्त छंद का प्रयोग।

मूल्यपरक प्रश्न

प्रश्न 1. 'फसल' कविता से हमें क्या सीख मिलती है? आधुनिक समय में इसकी प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- सीख:
    - प्रकृति और मानव श्रम का आपसी संबंध अनमोल है।
    - फसल की कीमत समझकर अन्न का अपव्यय नहीं करना चाहिए।
- प्रासंगिकता:

- आज भी किसानों का श्रम फसल उत्पादन का आधार है।
- जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण जरूरी है।

- निष्कर्ष: यह कविता हमें प्रकृति और किसानों के प्रति संवेदनशील बनाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'फसल' कविता में किसकी थिरकन का उल्लेख हुआ है?

(क) पानी की

(ख) हवा की

(ग) पेड़ों की

(घ) बादलों की

उत्तर: (ख) हवा की

प्रश्न 2. 'फसल' किस काव्यधारा की रचना है?

(क) छायावाद

(ख) प्रगतिवाद

(ग) प्रयोगवाद

(घ) रीतिकाल

उत्तर: (क) छायावाद

प्रश्न 3. निराला जी ने फसल को किसका 'रूपांतर' बताया है?

(क) चाँदनी का

(ख) सूरज की किरणों का

(ग) बारिश का

(घ) पेड़ों का

उत्तर: (ख) सूरज की किरणों का

नवाचारी प्रश्न (क्रिएटिव थिंकिंग)

प्रश्न 1. यदि फसल न हो, तो मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? अपने विचार लिखिए।

उत्तर:

- खाद्य संकट उत्पन्न होगा।
- किसानों का जीवन संकट में पड़ जाएगा।
- अर्थव्यवस्था चरमरा जाएगी क्योंकि कृषि हमारी आधारभूत आवश्यकता है।
- प्रकृति का संतुलन बिगड़ सकता है।

प्रश्न 2. 'फसल' कविता के आधार पर एक पोस्टर बनाइए जो अन्न के महत्व को दर्शाता हो।

(सुझाव:

- नदी, सूरज, हवा और किसानों के चित्र सम्मिलित करें।
- "अन्न का सम्मान करो, अपव्यय रोको" जैसा स्लोगन लिखें।)